Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य
अध्याय 03 - रहीम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. अकबर ने प्रभावित होकर रहीम को कौन-सी उपाधि दी थी?

(क) सूबेदार
(ख) मीर
(ग) खान-खाना
(घ) मिर्जा खान
उत्तर: (ग) खान-खाना

प्रश्न 2. रहीम ने किस धागे को चटकाकर न तोड़ने की बात कही है?

(क) प्रेम का धागा
(ख) सूत का धागा
(ग) रेशम की धागा
(घ) रिश्तों का धागा
उत्तर: (क) प्रेम का धागा

प्रश्न 3. रहीम ने किसकी भक्ति में पदों की रचना की?

(क) भगवान शिव
(ब) श्रीकृष्ण
(ग) माता दुर्गा
(घ) श्रीराम
उत्तर: (ग) माता दुर्गा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. विपति कसौटी में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर: विपति कसौटी में रूपक अलंकार है।

प्रश्न 2. 'अच्युत चरन तरंगिनी' में अच्युत किसे कहा है?

उत्तर: 'अच्युत' भगवान विष्णु को कहा गया है।

प्रश्न 3. रहीम ने किन लोगों को धन्ये कहा है?

उत्तर: गरीबों से हित करने वाले लोगों को रहीम ने धन्य कहा है।

प्रश्न 4. 'रहिमन भंवरी के भए' में भंवरी का क्या अर्थ है?

उत्तर: भंवरी का अर्थ है- शादी के फेरे (भाँवरें) लेना। हिन्दुओं में विवाह के समय वर-कन्या अग्नि की परिक्रमा करते हैं, इसको 'भाँवर' कहते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.'काज परै कुछ और है, काज सरै कछु और' को आशय लिखिए।

उत्तर: रहीम दास जी कहते हैं कि मनुष्य का स्वभाव बड़ा स्वार्थी होता है। वह अपने मतलब के लिए ही प्रेम रखता है। जब तक उसका मतलब पूरा नहीं होता, तब तक वह प्रेम और मित्रता का दिखावा करता है। मतलब निकल जाने पर उसका व्यवहार बदल जाता है, वह अपनी आँखें फेर लेता है। इस पंक्ति में मनुष्य की इसी स्वार्थ-परता का वर्णन है।

प्रश्न 2. रहीम सच्चा मित्र किसे मानते हैं?

उत्तर: रहीम दास जी के अनुसार सच्चा मित्र वही होता है जो सुख-दु:ख में समान रूप से साथ निभाता

है। रहीम उसी को सच्चा मित्र मानते हैं जो बुरा समय आने पर भी अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता तथा संकट के दिनों में भी उसका साथ निभाता है।

प्रश्न 3. रहीम ने दीपक तथा कपूत की समता का वर्णन क्यों किया है?

उत्तर: रहीम दास जी के अनुसार दीपक और को पुत्र दोनों समान है क्योंकि जिस प्रकार दीपक जलने पर वह उजाला करता है तथा बुझने पर अँधेरा हो जाता है। उसी प्रकार जब कुपुत्र का जन्म होता है तो लोग पुत्र-जन्म की खुशियाँ मनाते हैं। उसका जन्म घरवालों को आनन्द देता है किन्तु बड़ा होने पर अपने बुरे कार्यों के कारण अपमान का कारण बन जाता है।

प्रश्न 4.

'रहिमन पानी राखिए' में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है? .

उत्तर:

'रहिमन पानी राखिए' में पानी शब्द का प्रयोग तो एक बार ही हुआ है किन्तु 'मोती, मानुष तथा चून' के सम्बन्ध में उसके तीन अलग-अलग अर्थ हैं। मोती के सम्बन्ध में पानी का अर्थ है- उसकी चमक। मनुष्य के सम्बन्ध में पानी का अर्थ है- उसकी मान-मर्यादा तथा चून अर्थात् चूना के सम्बन्ध में उसका अर्थ है- जल इस प्रकार एक ही शब्द के तीन अर्थ होने के कारण इसमें श्लेष अलंकार है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. रहीम के काव्य की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि रहीम बहुभाषाविद् विद्वान तथा नीति मर्मज्ञ पुरुष थे। हिन्दी में नीति तथा भक्ति सम्बन्धी साहित्य में रहीम का अमूल्य योगदान है। बृज भाषा तथा अवधी भाषा 12 रहीम की बहुत अच्छी पकड़ थी। इन दोनों भाषाओं ने में उन्होंने उत्कृष्ट काव्य रचना की है। रहीम के में सरस, मधुर, प्रवाहपूर्ण तथा साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। इसमें तत्सम शब्दों का प्रधान्य है। यत्र-तत्र कुछ मुहावरों का प्रयोग ही सफलतापूर्वक हुआ है। 'भीर परे ठहराय' में भीर पड़ना अर्थात् संकट आना मुहावरे का प्रयोग हुआ है। रहीम ने अपने 'बरवै' छंदों की रचना के लिए अवधी भाषा को अपनाया है। उनकी अवधी सरल तथा बोधगम्य है। तत्सम प्रधानता के कारण वह आसानी से समझ में आ जाती है। हिन्दी की तीसरी उपभाषा खड़ी बोली है। यद्यपि उस समय खड़ी बोली का प्रयोग पद्य-रचना में नहीं होता था किन्तु रहीम ने अपने ग्रन्थ 'मदनाष्टक' की रचना के लिए खड़ी बोली को ही अपनाया है। रहीम की खड़ी बोली भी उनकी ब्रजभाषा तथा अवधी के समान तत्सम शब्दावली युक्त होने के कारण सरस और सुबोध है। रहीम ने मुख्यतया दोहा और सोरठा में रचनाएं की है। उनकी रचनाओं में सभी प्रचलित अलंकारों का सफलतापूर्वक प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 2. 'कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन' को विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर: 'कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन'- पंक्ति में कवि रहीम ने स्वाति नक्षत्र में बादलों से गिरने वाली पानी की बूंद के माध्यम से मनुष्य पर संगति के प्रभाव का वर्णन किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि जैसी संगति बैठिए तैसोई गुन दीन" अर्थात् मनुष्य जैसे लोगों की संगति में रहता है, उसमें वैसे ही गुण (दुर्गुण भी) उत्पन्न हो जाते हैं। स्वाति नक्षत्र में जब बादलों से वर्षा की बूंद गिरती है तो वह केले में गिरने पर कपूर बन जाती है, सीप में गिरने पर मोती बन जाती है तथा सर्प के मुख में गिरने पर विष बन जाती है। इस प्रकार जल की बूंद संगति के प्रभाव से तीन रूपों में बदल जाती है। केले

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

का साथ मिलने पर कपूर बनती है तो सीप को साथ होने पर मोती बन जाती है। वही बूंद सर्प के मुख में गिरती है तो विष बन जाती है। इस उदाहरण द्वारा कवि संगति के प्रभाव का वर्णन करना चाहता है। मनुष्य जैसे लोगों के साथ रहता है, वैसा ही उसका चरित्र बन जाता है।

प्रश्न 3. रहीम के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर संक्षेप में विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: हिन्दी साहित्य की समृद्धि में मुस्लिम कवियों का विशेष योगदान रहा है। इन कवियों में रहीम नाम से विख्यात 'अब्दुल रहीम खानखाना का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् 1556 ई० में सम्राट् अकबर के संरक्षक एवं परम विश्वासपात्र बैरम खाँ के घर लाहौर में हुआ। माता का नाम सुल्ताना बेगम था रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य संचालन, दान आदि गुण अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए थे सन् 1562 ई० में बैरम खान की मृत्यु के पश्चात् रहीम की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध अकबर ने स्वयं किया रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे

अकबर इनकी बुद्धिमत्ता , वीरता आदि से इतना प्रभावित हुआ कि उसने शहजादों को दी जाने वाली उपाधि मिर्जा खान से सम्मानित किया। रहीम का देहावसान सन् 1626 ई० में हुआ।

रहीम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में विविध गुणों का विलक्षण योग था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, बहुभाषाविद्, कला पारखी और राजनीतिज्ञ तथा प्रत्युत्पन्नमति थे। उनके 'दोहे' ब्रजभाषा में, 'बरवै' अवधी में तथा 'मदनाष्टक' खड़ी बोली में हैं। रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण हैं। मानसिक औदार्य, सांस्कृतिक विशालता और धार्मिक सहिष्णुता, मानवीयता इनकी रचनाओं के केन्द्र में है। इन्होंने ब्रज, अवधी, खड़ी बोली की सहज सरल एवं बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश है। शैली सरल, सुबोध और सहज ग्राह्य है। रहीम की रचनाओं में रहीम दोहावली' या सतसई 'बरवै नायिका भेद, 'मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी', शृंगारसोरठा', 'खेटकौतुक, नगर शोभा, संस्कृत काव्य, फुटकर काव्य विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रश्न 4. रहीम दुष्ट लोगों से मित्रता तथा शत्रुता क्यों नहीं रखना चाहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दुष्ट व्यक्ति मित्रता और शत्रुता दोनों के ही योग्य नहीं होते हैं अत: उनसे शत्रुता या मित्रता दोनों ही हानिकारक हो सकती हैं। यदि हम ओछे लोगों से शत्रुता का भाव रखेंगे तो वह हमको हानि पहुँचाने के लिए कोई भी ओछा काम कर सकते हैं। इसी प्रकार दुष्टों की मित्रता पर भी विश्वास करना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। वह अपने स्वार्थ के लिए कभी भी हमारे साथ विश्वासघात कर सकते हैं। कवि ने कुत्ते का उदाहरण देकर देते हुए कहते हैं कि कुत्ता चाहिए हमें काटे या हमें चाटे दोनों ही बातों में हमें नुकसान ही होता है। इस प्रकार कवि ने संदेश दिया है कि दुष्ट व्यक्तियों के प्रति तटस्थ भाव रखना चाहिए। उनसे दूरी बनाए रखना ही बुद्धिमानी है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य
अध्याय 03 - रहीम

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में मुस्लिम कवियों का विशेष योगदान रहा है। इन कवियों में रहीम नाम से विख्यात 'अब्दुल रहीम खानखाना का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् 1556 ई० में सम्राट् अकबर के संरक्षक एवं परम विश्वासपात्र बैरम खाँ के घर लाहौर में हुआ। माता का नाम सुल्ताना बेगम था रहीम को वीरता , राजनीति, राज्य संचालन, दान आदि गुण अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए थे सन् 1562 ई० में बैरम खान की मृत्यु के पश्चात् रहीम की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध अकबर ने स्वयं किया रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे

अकबर इनकी बुद्धिमत्ता , वीरता आदि से इतना प्रभावित हुआ कि उसने शहजादों को दी जाने वाली उपाधि मिर्जा खान से सम्मानित किया। रहीम का देहावसान सन् 1626 ई० में हुआ।

रहीम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में विविध गुणों का विलक्षण योग था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, बहुभाषाविद्, कला पारखी और राजनीतिज्ञ तथा प्रत्युत्पन्नमति थे। उनके 'दोहे' ब्रजभाषा में, 'बरवै' अवधी में तथा 'मदनाष्टक' खड़ी बोली में हैं। रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण हैं। मानसिक औदार्य, सांस्कृतिक विशालता और धार्मिक सहिष्णुता, मानवीयता इनकी रचनाओं के केन्द्र में है। इन्होंने ब्रज , अवधी, खड़ी बोली की सहज सरल एवं बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है इनके काव्य में नीति, भक्ति,

प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश है। शैली सरल , सुबोध और सहज ग्राह्य है। रहीम की रचनाओं में रहीम दोहावली ' या सतसई 'बरवै नायिका भेद , 'मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी', शृंगारसोरठा', 'खेटकौतुक, नगर शोभा , संस्कृत काव्य, फुटकर काव्य विशेष उल्लेखनीय हैं।

पाठ परिचय

प्रस्तुत संकलित दोहों में रहीम ने अपने जीवनानुभवों को सहजरूप में अभिव्यक्ति दी है। वे मानते हैं मनुष्य को अपना स्वाभिमान बराबर बनाए रखना चाहिए संगति जीवन को पर्याप्त प्रभावित करती है। मनुष्य जैसै आचरण वाले लोगों के साथ रहता है , वैसा ही बन जाता है ; परंतु जो उत्तम प्रकृति के होते हैं , उन पर बुरे लोगों का प्रभाव वैसे ही नहीं पड़ता है ; जैसे चंदन के वृक्ष पर साँप लिपटे रहने पर भी चंदन अपनी सुगंधि नहीं छोड़ता है। रहीम ने यह भी बताया कि विपरीत स्वभाव के लोग एक साथ परस्पर सद्भाव से नहीं रह सकते । रहीम इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य को प्रेम भाव बनाए रखना चाहिए तथा पेड़-पौधों की तरह दानशील प्रवृत्ति रखनी चाहिए। मनुष्य को दुष्ट प्रकृति के लोगों से मित्रता और शत्रुता दोनों प्रकार के संबंध नहीं रखने चाहिए। वस्तुतः रहीम के दोहे जीवन की पाठशाला हैं , जिनमें धर्म, नीति, व्यवहार, राजनीति आदि जीवनोपयोगी विषय अभिव्यक्त हुए हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

1. अच्युत चरन तरंगिनी, सिव सिर मालति माल।
हरि न बनाओ सुरसरी, कीजौ इंदव-भाल।।
अमी पियावत मान बिनु, रहिमन मोहि न सुहाय।
मान सहित मरिबो भलो, जो बिस देय बुलाय।।

कठिन शब्दार्थ – अच्युत = भगवान विष्णु। चरन = चरण , पैर। तरंगिनी = लहराने वाली। मालति = एक फूल। माल = माला। हरि = विष्णु। सुरसरी = गंगा। कीजौ = करना, बनाना। इन्दव भाल = जिनके मस्तक पर चन्द्रमा है , शिव। अमी = अमृत। मान बिनु = बिना सम्मान के। सुहाय = अच्छा लगना। मरिबौ = मरना। बिस = विष, जहर। बुलाय = बुलाकर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं।इनके रचयिता कविवर रहीम है। प्रथम दोहे में कवि गंगा से प्रार्थना कर रहा है कि वह उसको हरि न बनाकर शिव बनाने की कृपा करें ताकि वह उन्हें सिर पर धारण कर सकें। दूसरे दोहे में कवि ने अपमान सहित अमृत पीने की अपेक्षा मान सहित विष पीना श्रेष्ठ बताया है।

व्याख्या– कवि रहीम परम पावन और सर्वसक्षम गंगा माता से प्रार्थना करता है कि आप भगवान विष्णु के चरणों में तथा भगवान शिव के सिर पर विराजती हैं। हे माता ! यदि आप कृपा करके मेरा उद्धार करें तो मुझे विष्णु नहीं शिव स्वरूप प्रदान करना , ताकि मैं आपके चरणों में रखने के पाप का भागी न बनु। आपको अपने सिर पर धारण करने का सौभाग्य प्राप्त कर पाऊँ। द्वितीय दोहे में कवि ने आत्मसम्मान के साथ जीने की प्रेरणा दी है। कवि कहता है यदि कोई मुझे बिना उचित सम्मान के अमृत भी पिलाएँ तो मुझे वह स्वीकार नहीं होगा। यदि सम्मान सहित बुलाकर कोई मुझे विष भी पिलाए, तो मैं उस विष को पीकर सम्मान के साथ मरना स्वीकार करूंगा।

विशेष –

1. मुसलमान होते हुए भी कवि रहीम ने हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति भक्ति और आदर का भाव प्रदर्शित किया है।

2. कवि को हिन्दू धर्मग्रन्थों का अच्छा परिचय प्राप्त है।
3. शिव स्वरूप पाने के पीछे कवि ने रोचक तर्क दिया है।
4. कवि ने संदेश दिया है कि अपमानपूर्वक सुखी जीवन जीने से समम्मान सहित मृत्यु का वरण करना ही श्रेष्ठ जीवन शैली है।
5. 'शिव सिर' तथा 'मालति माल' में अनुप्रास अलंकार है।
6. भाषा साहित्यिक ब्रजी है तथा कथन शैली चमत्कारपूर्ण तथा उपदेशात्मक है।

2. कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन।।
कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
विपति-कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।

कठिन शब्दार्थ – कदली = केले का वृक्ष। सीप = जल के कीट द्वारा निर्मित कठोर खोल, जिसमें मोती बनता है। भुजंग = सर्प। स्वाति = ज्योतिष में मान्य एक नक्षत्र। तैसोई = वैसा ही। सम्पत्ति = सम्पन्नता के समय , धन होने पर। सगे = अति निकट सम्बन्धी, समान रक्त वाले सम्बन्धी। बनत = बन जाते हैं। बहुरीति = अनेक प्रकार से। बिपति = कसौटी , संकटरूपी परीक्षा। कसे = कसकर देखे गए, परखे गए। मीत = मित्र।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। प्रथम दोहे में कवि ने संगति के विविध प्रभावों का वर्णन किया है। दूसरे दोहे में विपत्ति को ही सच्चे मित्रों की कसौटी बताया है।

व्याख्या – कवि ने संगति के प्रभाव को बताते हुए कहा है कि अच्छी संगति का व्यक्ति और वस्तु पर अच्छा और बुरी संगति बुरा प्रभाव होता है। जैसे स्वाति नक्षत्र के समय में गिरने वाली जल की बूंद जब केले पर गिरती है

तो कपूर बन जाती है, सीपी में जा गिरती है तो मोती बन जाती है। वही बूंद जब सर्प के मुख में गिरती है तो प्राणघातक विष बन जाती है। स्पष्ट है कि मनुष्य जैसी संगति करेगा उसे वैसा ही (अच्छा या बुरा) फल प्राप्त होगा। कवि रहीम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति धन सम्पन्न होता है तो बहुत से अपरिचित लोग भी अनेक उपायों से उसके सगे सम्बन्धी बन जाया करते हैं। परन्तु सगेपन और मित्रता की सच्ची परीक्षा तो संकट आने पर होती है। संकट के समय जो मनुष्य का सच्चे मन के साथ देता है वही उसका सच्च मित्र होता है। स्वार्थी मित्र तो सुख के साथी होते हैं , बुरे दिन आते ही किनारा कर जाते हैं।

विशेष –

1. प्रथम दोहे द्वारा कवि ने संदेश दिया है कि मनुष्य को सदा अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए।
2. कुसंग का बुरा फल मिलना अवश्यम्भावी है। कवि ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है।
3. सच्चे मित्र की पहचान बताइयी है।
4. प्रथम दोहे में उदाहरण अलंकार है। 'संपति सगे' तथा 'बनत बहुत बहु' में अनुप्रास अलंकार है। 'विपति-कसौटी' रूपक अलंकार है।
5. भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है।

3. काज परै कछु और है, काज सरै कछ और।
रहिमन भंवरी के भए, नदी सिरावत मौर।।
खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर-प्रीति मद-पान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।।

कठिन शब्दार्थ – काज = काम। परै = पड़ने पर। कछु = कुछ। और = अन्य या भिन्न प्रकार का व्यवहार। सरै = सम्पन्न होना , पूरा होना, काम निकल जाना। भंवरी = हिन्दुओं के विवाहों में होने वाली एक रीति जिसमें वर और कन्या अग्नि के फेरे लेते हैं। सिरावत = प्रवाहित करना। मौर = विवाह के अवसर पर वर द्वारा सिर पर धारण किए जाने वाला मुकुट। खैर = कुशलता की भावना। खून = हत्या। वैर = शत्रुता। प्रीति = प्रेम। मद-पान = शराब आदि पीना , नशा करना। दावे = छिपाने पर। जानत = जानता है। जहान = संसार, दुनिया।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। प्रथम दोहे में कवि ने बताया है कि इस संसार में लोग अवसर देखकर अपने व्यवहार की नीति को बदल लिया करते हैं। द्वितीय दोहे में बताया गया है कि कुछ बातें ऐसी होती हैं कि वे प्रयत्न करने पर भी छिपाई नहीं जा सकतीं तथा दूसरों के सामने प्रकट हो जाती हैं।

व्याख्या – कवि रहीम कहते हैं कि यह संसार बड़ा मतलबी है। जब काम पड़ता है तो उसका व्यवहार कुछ भिन्न प्रकार का होता है तथा काम निकल जाने पर वह पूर्व के व्यवहार के विपरीत तरह का व्यवहार करता है। लोग अपना काम अटकने पर बड़ा मधुर और स्नेह-सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हैं तथा काम निकलने पर मुँह फेर लेते हैं , पूछते तक नहीं। हिन्दुओं में विवाह के अवसर पर वर अपने सिर पर मौर (सेहरा) बाँधकर कन्या के घर जाता है। वहाँ वर और कन्या अग्नि की परिक्रमा करते हैं अथवा फेरे लेते हैं। फेरे लेने से पहले जिस मौर को सम्मान के साथ सिर पर धारण किया जाता है,

उसे फेरे लेने की क्रिया पूरी होने के पश्चात् नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

कवि रहीम कहते हैं कि खैरियत अर्थात् कुशलता का होना , किसी की हत्या करना, खाँसी की बीमारी होना, मन में किसी कारण प्रसन्नता होना, किसी के प्रति शत्रुता होना अथवा प्रेम होना तथा शराब पीना या नशा करना आदि बातें ऐसी हैं कि मनुष्य के द्वारा छिपाने का प्रयत्न करने पर भी छिपती नहीं हैं और स्वयं ही पूरे संसार को उनके बारे में पता चल जाता है। मनुष्य को उनके बारे में पता चल जाता है। मनुष्य प्रयास करके भी इनको छिपा नहीं पाता और वे पूरे संसार में प्रगट हो जाती हैं।

विशेष –

1. 'काज परै और काज सरै'-में लोगों के दोहरे आचरण के बारे में बताया गया है।
2. लोग बड़े मतलबी होते हैं तथा अपने लाभ को देखकर ही व्यवहार करते हैं।
3. दोहा छंद ब्रजभाषा तथा दृष्टान्त अलंकार है।
4. 'खैर-खुशी' में अनुप्रास अलंकार है।
5. कवि रहीम ने यहाँ अपने अनुभव से मानवीय स्वभाव का वर्णन किया है।

4. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होय।।

कठिन शब्दार्थ – उत्तम = श्रेष्ठ, उज्च। प्रकृति = स्वभाव का = क्या। कुसंग = बुरी संगति। विष= जहर। व्यापत = प्रमाणित करना। भुजंग = साँप। गति = चाल, कार्यपद्धति। कपूत = कुपुत्र, अनाचारी बेटा। बारे = जलना, बचपन। बढ़ = बुझना , बड़ा होना। उजियारो = उजाला , प्रकाश, प्रशंसा। अँधेरो = अन्धकार, बदनामी।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। कवि रहीम ने बताया है कि श्रेष्ठ प्रकृति के लोगों पर बुरे लोगों के साथ का प्रभाव नहीं होता। अपनी प्रकृति के कारण वे बुराई से अप्रभावित ही रहते हैं। दूसरे दोहे में कवि ने कुपुत्र के आचरण-व्यवहार को परिवार के लिए अहितकारी बताया है।

व्याख्या – कवि रहीम कहते हैं कि यदि मनुष्य का स्वभाव श्रेष्ठ और ऊँचा है तो बुरे लोगों के साथ रहने पर भी वह उनकी बुराइयों से अप्रभावित ही रहता है। उस पर बुरों की संगति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जिस प्रकार चन्दन के वृक्ष से सर्प लिपटे रहकर भी उसको अपने विष से हानि नहीं पहुँचा पाते तथा उसकी शीतलता नष्ट नहीं कर पाते , उसी प्रकार दुष्टों की संगति सज्जनों को प्रभावित नहीं कर पाती।

रहीम कहते हैं कि परिवार में जन्म लेने वाले कुपुत्र की कार्य-व्यवहार पद्धति दीपक के समान होती है , दीपक जलाया जाता है। तो उसका प्रकाश चारों ओर फैलकर सभी वस्तुओं को प्रकाशित कर देता है तथा उसके बुझने पर सर्वत्र अन्धकार छाया जाता है। इसी प्रकार जब किसी परिवार से कोई

कुपुत्र जन्म लेता है तो लोग पुत्र-जन्म की खुशियाँ मनाते हैं और सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण फैल जाता है। उसके बड़े होने पर उसके बुरे कार्यों के कारण परिवार के लोग अपमानित तथा प्रताड़ित होते हैं तथा उनकी समाज में बेइज्जती होती है और पुत्र-जन्म के समय की खुशियाँ नष्ट हो जाती हैं।

विशेष –

1. दोहा छंद है तथा साहित्यिक मधुर ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
2. दृष्टान्त अलंकार व अनुप्रास अलंकार है।
3. मनुष्य का स्वभाव यदि श्रेष्ठ है तो उस पर बुरे लोगों का साथ कोई प्रभाव नहीं डालता।
4. दूसरे दोहे में कुपुत्र के आचरण का वर्णन है जिसके कारण परिवार को दूसरों के सामने लज्जित होना पड़ता है।
5. कवि ने इसकी तुलना दीपक के जलने और बुझने से की है।
6. 'बारो उजियारौ' तथा 'बढ़े अँधेरो' में श्लेष अलंकार है।

5. रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो ना प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोऊ भाँति बिपरीत।।
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठि परि जाय।।

कठिन शब्दार्थ – ओछे = तुच्छ , नीच। स्वान = कुत्ता। भाँति = प्रकार। विपरीत = प्रतिकूल, अहितकर। धागा = डोरा। चटकाया = चट की आवाज के साथ, प्रथकता के विचार से। गाँठ = जोड़, अवरोध।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। रहीम ने नीति

सम्बन्धी प्रथम दोहे में नीचे मनुष्यों से तटस्थ रहने का परामर्श दिया है। दूसरे दोहे में कवि ने संदेश दिया है कि प्रेम सम्बन्धों को असावधानीपूर्वक नष्ट नहीं करना चाहिए। एक बार प्रेम में व्यवधान होने पर उसमें पहले जैसी तन्मयता नहीं रह जाती है।

व्याख्या – कविवर रहीम कहते हैं कि मनुष्य को नीच स्वभाव के लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में सावधानी से काम लेना चाहिए। उनके साथ न तो प्रेम ही करना चाहिए और न उनसे बैर ही करना चाहिए। दोनों ही अवस्थाओं में वे दूसरों का अहित ही करते हैं। कुत्ता मनुष्य को काट लेता है तो उसको बहुत कष्ट होता है। वह मनुष्य के शरीर को चाटता है , तब भी छति होने का खतरा बना रहता है। उसका काटना तथा चाटना-दोनों ही मनुष्य के हित के प्रतिकूल होते हैं।
कविवर रहीम कहते हैं कि प्रेम एक धागे के समान है। दूसरों के साथ अपने प्रेम के सम्बन्ध को हमें बिना विचारे असावधानीवश नष्ट नहीं करना चाहिए। प्रेम का सम्बन्ध टूटने पर दोबारा जुड़ता नहीं है। यदि जुड़ता भी है तो थोड़ा अवरोध तो रह ही जाता है। धागे को तोड़ने पर वह पहले की तरह नहीं जुड़ता, यदि जुड़ता भी है तो उसमें गाँठ लगानी पड़ती है।

विशेष –

1. सरस, मधुर ब्रजभाषा है। दोहा छन्द में रचना है।
2. कवि ने नीति विषयक बातें सरल ढंग से समझाई हैं।
3. ओछे लोगों से प्रेम तथा शत्रुता का निषेध किया गया है।
4. धागा प्रेम का' में रूपक अलंकार है।
5. प्रथम दोहे में दृष्टान्त अलंकार है।

6. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए ने ऊबरै, मोती मानुष चून।।
प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय।।

कठिन शब्दार्थ – पानी = जल, मर्यादा, चमक। सून = शून्य, बेकार। पानी गए = पानी नष्ट होने , मर्यादा भंग होने , चमक मिटने। ऊबरे = उबरना , रक्षा होना। मानुष = मनुष्य। चून = चूना। प्रीतम = प्रियतम , प्रेमी। छवि = शोभा। पर = पराई , दूसरों की। समाय = स्थान प्राप्त होना। सराय = धर्मशाला। पथिक = यात्री। फिर जाय = लौटकर चला जाता है।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। कवि ने प्रथम दोहे में बताया है कि मनुष्य को अपनी मान-मर्यादा के प्रति सतर्क रहने चाहिए। मर्यादाहीन मनुष्य को संसार में कोई नहीं पूछता।। कवि ने दूसरे दोहे में ईश्वर के सच्चे भक्त का लक्षण यह बताया है कि उसके नेत्रों में सदा ईश्वर की छवि रहती है। उसे छोड़कर वह सांसारिक वस्तुओं में आसक्त नहीं होता।

व्याख्या – कविवर रहीम कहते हैं कि संसार में पानी का बड़ा महत्त्व है। पानी के बिना सब कुछ अर्थहीन हो जाता है। पानी के अभाव में मोती , मनुष्य तथा चूना का महत्त्व घट जाता है। मोती का पानी अर्थात चमक उतरने पर उसका सौंदर्य तथा मूल्य घट जाता है। मनुष्य का पानी अर्थात् मर्यादा नष्ट होने से समाज में वह सम्माननीय नहीं रह जाता। चूने का पानी सूख जाने पर वह प्रयोग के योग्य नहीं रह जाता है।

कविवर रहीम कहते हैं कि जिस मनुष्य के नेत्रों में अपने प्रियतम परमात्मा की छवि विराजमान है , वहाँ किसी अन्य सांसारिक वस्तु का आकर्षण टिक नहीं पाता। अथवा जब कोई प्रेयसी अपने प्रेमी से अनन्य प्रेम करती है तो किसी अन्य पुरुष की सुन्दरता उसको आकर्षित नहीं कर पाती। जब किसी धर्मशाला अथवा सराय में कोई स्थान रिक्त नहीं होता तो यह देखकर वहाँ आने वाला यात्री स्वयं ही लौटकर चला जाता है। उसी प्रकार प्रियतम की छवि वाली आँखों में सांसारिक वैभव के प्रति आकर्षण नहीं पाया जाता।

विशेष –

1. श्लेष अलंकार के प्रयोग द्वारा कवि ने पानी के तीन अर्थ चमक , मर्यादा तथा जल बताए हैं। मोती के लिए चमक , मनुष्य के लिए मर्यादा तथा चूने के लिए जल का होना आवश्यक है।
2. कवि ने संदेश दिया है कि मनुष्य को अपनी मान-मर्यादा की रक्षा के प्रति सतर्क रहना चाहिए।
3. अनुप्रास तथा श्लेष अलंकार है।
4. दूसरे दोहे में ईश्वर के प्रति सच्ची लगन को भक्त के लिए आवश्यक बताया गया है।
5. दृष्टान्त अलंकार है।
6. दोहा छन्द है तथा सरस मधुर ब्रजभाषा है।

7. यों रहीम जस होत है, उपकारी के संग।
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

कठिन शब्दार्थ – यों = इस प्रकार। जस = यश, प्रशंसा। बाँटन वारे = पीसने वाला। मेंहदी = एक पेड़ , जिसकी पत्तियाँ पीसकर हाथों पर रचाई जाती हैं। बिगरी = बिगड़ी , खराब हुई। बनै = सुधरना। लाख करै = लाखों प्रयत्न करना। फाटे = फटे हुए। माखन = मक्खन।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। प्रथम दोहे में कवि ने बताया है कि सज्जनों का साथ अच्छा होता है तथा सज्जनों के साथ रहने वाले को इसका लाभ बिना प्रयास के ही मिल जाता है। द्वितीय दोहे में कवि ने अपनी बात की रक्षा का संदेश दिया है तथा बताया है कि बात बिगड़ने के बाद लाखों प्रयत्न करके भी उसको सुधारा नहीं जा सकता।

व्याख्या – कवि कहता है कि परोपकार करने वालों के साथ रहना सदा लाभदायक होता है। साथ रहने वाले को इसका लाभ अनायास प्राप्त होता है। उसको संसार में प्रशंसा का पात्र समझा जाता है। जिस प्रकार पत्थर पर मेंहदी की पत्तियों को पीसने वाले के हाथ मेंहदी के रंग से बिना रचाएं ही लाल हो जाते हैं उसी प्रकार परोपकारी का साथी भी बिना कुछ करे प्रशंसनीय हो जाता है।
कविवर रहीम लोगों को सावधान करना चाहते हैं कि उनको अपने कार्यों के प्रति सजग रहना चाहिए। यदि असावधानीवश एक बार कोई काम बिगड़ जाता है तो लाखों प्रयत्न करने पर भी उसमें सुधार नहीं हो पाता। यदि दूध फट जाता है तो कोई उसको कितनी ही देर तक बिलोए उससे मक्खन नहीं निकलता।

THE HINDI PAGE जागे कुछ नया www.thehindipage.com

विशेष –

1. प्रस्तुत दोहों में कवि ने नीति से सम्बन्धित बातें बतलाई हैं।
2. कवि ने बताया है कि परोपकारी पुरुष का साथ करना चाहिए क्योंकि उसका लाभ निष्प्रयास मिलता है।
3. हमें अपना काम सतर्क रहकर करना चाहिए। खराब होने पर अपने किए हुए कार्य का फल प्राप्त नहीं होता।
4. इन पद्यांशों में सरस एवं मधुर ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
5. कवि ने दोहा छन्द में रचना प्रस्तुत की है।
6. 'बिगरी.....बनै' में अनुप्रास अलंकार है। उदाहरण अलंकार भी है।

8. मथत-मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय।।

कठिन शब्दार्थ – मथत-मथत = बार-बार दही बिलौना। माखन = मक्खन। बिलगाय = अलग हो जाता है। सोई = वही। मीत = मित्र। भीर परे = कठिन समय आने पर। ठहराय = साथ रहे।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'दोहे' शीर्षक से लिये गये हैं। इनके रचयिता कविवर रहीम है। कवि ने इस दोहे में सच्चे मित्र की पहचान बताई है।

व्याख्या – कविवर रहीम कहते हैं कि सच्चा मित्र सदा संकट में साथ निभाता है। सच्चे मित्र की पहचान यही है कि वह संकट आने पर कभी अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता। जिस प्रकार दही को बार-बार बिलोया जाता है तो दही और मट्ठा तो अलग हो जाते हैं किन्तु मक्खन वहीं स्थिर

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

रहता है। तात्पर्य यह है कि सच्चा मित्र मक्खन की तरह अपने मित्र के सदा साथ रहता है।

विशेष –

1. सरल, सरस, मधुर ब्रजभाषा है।
2. दोहा छंद है।
3. 'मथत मथत माखन' में अनुप्रास अलंकार है। दृष्टान्त अलंकार भी है।
4. 'भीर परे' मुहावरे का प्रयोग है।
5. सच्चा मित्र मुसीबत के समय अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg